ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती : एक अभिनव प्रयास

कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी

उत्तर प्रदेश में वर्षाकालीन मूँगफली की खेती वर्ष 1981–82 में 2.62 लाख हे0 क्षेत्रफल पर की जाती थी जिससे 2.54 लाख मैट्रिक टन उत्पादन मिलता था तथा उत्पादकता 9.71 कु0/हे0 थी। परन्तु प्रभावी तकनीक प्रसार एवं रोग व कीटों के उचित प्रबन्धन के अभाव में मूँगफली के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता में निरन्तर गिरावट आती गयी और वर्ष 2003–04 में मूँगफली का क्षेत्रफल 0.93 लाख हे0, उत्पादन 0.60 लाख मैट्रिक टन तथा उत्पादकता 6.36 कु0/हे0 तक सीमित हो गया। जिन क्षेत्रों में वर्षाकालीन मूँगफली मुख्य फसल के रूप में होती थी अब उन क्षेत्रों में कृषक इसकी खेती करने से कतराने लगे और मूँगफली की जगह धान, मक्का तथा बाजरा की खेती करने लगे मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए अन्तराष्ट्रीय अर्द्व–शुष्क ऊष्ण कटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान ; हैदराबाद से प्राप्त ग्रीष्मकालीन प्रजातियों के बीज का परीक्षण मूँगफली शोध प्रक्षेत्र, मैनपुरी के वैज्ञानिकों द्वारा जायद में किया गया जिसमें डी$_4$डी$_{8-6}$, डी$_4$डी$_{8-10}$ एवं डी$_4$डी$_{8-14}$ एवं आई0सी0जी0वी0–93468 प्रजातियां 90–100 दिन की परिपक्वता अवधि में 20–30 कु0/हे0 उत्पादन क्षमता वाली पाई गई थी। परीक्षण उपरान्त ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती के उत्पादन तकनीकी का प्रसार कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा वर्ष 2001 में प्रारम्भ किया गया। जनपद में रबी फसलों जैसे मटर, सब्जी मटर, सरसों, आलू, लहसुन, आदि के बाद किसान अपने खेत गर्मी में खाली छोड़ देते थे अथवा पिछेती गेहूँ व अपनी घरेलू आवश्यकतानुसार थोड़े क्षेत्रफल में शाकभाजी की खेती करते थे जिससे कोई विशेष उत्पादन व लाभ नहीं हो पाता था। ऐसे क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती कृषकों के लिये विकल्प के रूप में नजर आयी।

सर्वप्रथम जेड0ए0आर0एस0 के0वी0के0 मैनपुरी द्वारा वर्ष 2001 में ग्रीष्म ऋतु में मैनपुरी जनपद के ग्राम राजपुरा के 10 कृषकों के 2 हे0 क्षेत्रफल में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती पर प्रदर्शन आयोजित किया गया जिसकी औसत उपज 27.8 कु0/हे0 तथा कुल उत्पादन 55.60 कु0 प्राप्त हुआ। यह उत्पादन 10 कृषकों के खेतों मं 25–32 कु0 प्रति हे0 की दर से प्राप्त हुआ था। वर्ष 2002 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा कृषकों के खेतों में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती के प्रसार हेतु 15 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर प्रदर्शन कराये गये जिसकी औसत उपज 27.30 कु0/है0 तथा कुल उत्पादन 682.50 कु0 प्राप्त हुआ। वर्ष 2003 में ग्रीष्मकालीन मूँगफली के क्षत्रफल में क्षैतिज विस्तर के कारण इसका क्षेत्रफल बढ़कर 500 हे0 हो गया तथा उत्पादकता विगत् वर्षों के लगभग बराबर रहते हुए कुल उत्पादन 13450 कु0 प्राप्त हुआ। कृषि विज्ञान केन्द्र मैनपुरी ने कृषक प्रक्षेत्रों पर ग्रीष्मकालीन मूँगफली के बीजोत्पादन तकनीक पर 50 कृषकों को प्रशिक्षित किया तथा उनके खेतों पर बीजोत्पादन कराया। जनपद के सुल्तानगंज, किशनी, वेवर, मैनपुरी सदर विकासखण्ड़ों के कृषक बीज उत्पादक ग्रामों के कृषकों से उनके द्वारा उत्पादित बीज को प्राप्त कर अपने क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती करने लगे। परिणाम स्वरूप जनपद में ग्रीष्मकालीन मूँगफली के क्षेत्रफल में वृहद स्तर पर वृद्धि हुई (सारणी–1)। इस प्रकार जायद में कृषकों के लिए ग्रीष्मकालीन मूँगफली एक बरदान साबित हुई जिसे देखकर पड़ोसी जनपदों (फर्रूखाबाद, एटा, इटावा, कन्नौज, फिरोजाबाद, महामाया नगर, अलीगढ़) के कृषक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के वैज्ञानिकों व किसानों से ग्रीष्मकालीन मूँगफली के बीज हेतु सम्पर्क किये तथा मैनपुरी के किसानों से बीज ले जाने लगे। कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के वैज्ञानिकों द्वारा गर्मी में खाली पड़े खेतों को शत–प्रतिशत ग्रीष्मकालीन मूँगफली से आच्छादित करने हेतु सतत् प्रयास किया गया। केन्द्र द्वारा ग्रीष्मकालीन मूँगफली हेतु अपनाए गये मजबूत प्रसार प्रबन्धन के कारण मैनपुरी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में मूँगफली का क्षेत्रफल एवं उत्पादन में निरन्तर बढ़ोत्तरी हुई है जिनके आंकड़े सारिणी–3 में अंकित हैं।

सारिणी–1 : मैनपुरी जनपद में ग्रीष्मकालीन मूँगफली का वर्षावार क्षेत्र विस्तार (हे0), उत्पादकों की संख्या, कुल उत्पादन (मै0टन), औसत उपज (कु0/हे0) एवं शुद्व आय (रू0/हे0)।

विवरण	वर्ष								
	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009
क्षेत्रफल (हे0)	2	25	500	1500	4485	13260	24200	35000	36000
आच्छादित ग्रामों की संख्या	1	5	40	75	120	280	310	340	371
उत्पादकों की संख्या	10	60	900	2000	3200	7100	8400	8900	9200
कुल उत्पादन (मै0 टन)	5.56	68.25	1345	3900	11212.5	35006.4	69920	91000	94140
सकल आय (रू0 करोड़)	0.012	0.1365	2.69	7.80	24.66	87.51	172.80	227.50	235.35
औसत उपज (कु0/हे0)	27.8	27.30	26.90	26.00	25.00	26.40	26.00	26.00	26.15
सकल आय (रू0/हे0)	55600	54600	53800	52000	46000	52800	52000	52000	53500.00
औसत शुद्व आय (रू0/हे0)	33600	32600	31800	30000	24000	38000	30000	30000	31500.00

जायद में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती का शुद्ध लाभ व लागत लाभ अनुपात इस मौसम की अन्य फसलें जैसे मूँग, उर्द, मक्का, कद्दू वर्गीय फसलों की तुलना में अधिक है (सारिणी–2)

सारिणी–2 : जायद में मूँगफली व अन्य फसलों का आय–व्यय एवं शुद्व लाभ (रू0/हे0) का तुलनात्मक अध्ययन।

फसलें	उत्पादन लागत (रू0/है0)	सकल आय (रू0/है0)	शुद्व लाभ (रू0/है0)	लागत लाभ अनुपात
ग्रीष्मकालीन मूँगफली	22000	53500	31500	1:2.36
मूँग/उर्द	15000	17820	2820	1:1.18
मक्का	13934	20355	6421	1:1.46
कद्दूवर्गीय फसलें	17520	35000	17480	1:1.99
पिछेती गेहूँ	16000	23125	7125	1:1.45

ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती से वर्ष 2003 में लगभग 2.69 करोड़ रु0 का सकल उत्पाद प्राप्त हुआ जो 2009 में बढ़कर 235.35 करोड़ रु0 हो गया है जिसका फायदा सीधे जनपद के किसानों को हुआ है।

प्रतिविम्बन :

- जायद में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती के कारण मक्का–मक्का–आलू–ग्रीष्मकालीन मूँगफली, मक्का/सब्जियाँ–सरसों–ग्रीष्मकालीन मूँगफली, मूँगफली–सब्जी मटर–ग्रीष्मकालीन मूँगफली, मूँगफली–मटर–ग्रीष्मकालीन मूँगफली, मूँग/बाजरा/उर्द–सरसों–ग्रीष्मकालीन मूँगफली फसल चक्र प्रचलित हो गये है तथा इन क्षेत्रों की फसल सघनता में 100 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- जायद की अन्य फसलों की तुलना में ग्रीष्मकालीन मूँगफली से अधिक शुद्ध लाभ होने के कारण इसके क्षेत्रफल, उत्पादकों की संख्या, आच्छादित ग्रामों की संख्या व कुल उत्पादन में प्रारम्भिक वर्ष 2001 के सापेक्ष क्रमशः 18000, 920, 371, 1693 गुना वृद्धि हुई है जो इस फसल की लोकप्रियता एवं सर्वाधिक फायदे की फसल को सिद्ध करती है।
- जनपद के कृषकों द्वारा प्रदेश के अन्य जनपदों जैसे फर्रुखाबाद, कन्नौज, इटावा, एटा, फिरोजाबाद, महामाया नगर, व अलीगढ़ के कृषकों को ग्रीष्मकालीन मूँगफली के बीज की पूर्ति की जा रही है जिससे प्रदेश में ग्रीष्मकालीन मूँगफली के क्षेत्रफल में तेजी से विस्तार हुआ है।
- 90 –100 दिन की अवधि में ग्रीष्मकालीन मूँगफली की खेती से कृषकों को औसतन रु0 30 हजार का शुद्ध लाभ हो रहा है तथा जनपद में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 235.35 करोड़ रु0 का व्यवसाय हो रहा है इसके साथ ही रोजगार के दिवसो में भी वृद्धि हुई है।
- इस प्रकार मैनपुरी में ग्रीष्मकालीन मूँगफली को अभूतपूर्व सफल कहानी के रूप में देखा जा सकता है और कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा किये गये इस अभिनव प्रयास को एक स्वर्णिम उदाहरण माना जा सकता हैं।

सारिणी–3: उत्तर प्रदेश में ग्रीष्मकालीन मूँगफली का वर्षवार क्षेत्र विस्तार, उत्पादन एवं उत्पादकता।

वर्ष	क्षेत्रफल (हे0)	उत्पादन (मै0टन)	उत्पादकता (कु0/हे0)
2001	2.00	5.56	27.80
2002	25.00	68.25	27.30
2003	500.00	1345.00	26.90
2004	20000.00	53100.00	26.55
2005	27500.00	70675.00	25.70
2006	63710.00	161504.85	25.35
2007,	85290.00	215783.00	25.30
2008	138415.00	348806.00	25.00
2009	209405.00	533983.00	25.50

संकलन : जायद सघन पद्धतियाँ, कृषि विभाग उत्तर प्रदेश, 2010।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा ग्रीष्मकालीन मूँगफली के क्षेत्र विस्तार में अपनाये गये प्रसार साधन

- सहभागी बैलीडेसन परीक्षण
- सहभागी प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र दिवस
- सम्बन्धित प्रशिक्षण
- जिला व क्षेत्र स्तरीय कृषक गोष्ठी
- किसान विद्यालय व कृषक समूहों के माध्यम से प्रचार–प्रसार
- मासिक गोष्ठी
- मूँगफली महोत्सव व किसान मेला
- मूँगफली वाले खेतों का कृषक समूहों द्वारा भ्रमण
- सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन व वितरण
- समाचार पत्रों व इलेक्ट्रानिक माध्यमों से प्रचार–प्रसार
- कृषि वर्कशाप, कृषि प्रदर्षनी एवं कृषि विज्ञान केन्द्र सम्मेलन के माध्यम से प्रस्तुतीकरण
- कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र में भ्रमण, सुझाव एवं वैज्ञानिकों द्वारा मोबाइल/दूरभाष से कृषकों को सलाह